

राजवाडा

१५.८.१९२२

हिंदु  
१९२२

ज्येष्ठ अष्टमी १९२२



१९२२ रोप. १८३

अंब्रभेदेन गतुर्वर्त्तेनोव्यं सचराचरो ॥ विवेक  
नैव) विश्वा सातं स्यद्धाविधियते ॥ ११ ॥ १५ मा  
प्राप्तितः अभ्यस्तया दीद्युतिर्ग ॥ द्वारः स  
वं परस्तमामितर्य इक्षाविधिभियतो ॥ २ ॥ ३५ मा  
कम्पभीतरस्य मति भीतरस्य म ॥ ३ ॥ ३६ मा  
तरस्य भीतेनास्ति साहासुना ॥ ३ ॥ ३७ मा  
सादाशारथीरा मो आस्माय मोस्ति सध्यमा ॥  
५ ॥ ३८ मा निर्जनास्त्रज्ञसो हंसमुखो चनः ॥ ४ ॥  
३९ मा नरसेवात् देव सेवं तिभ्यमां उत्तमा  
४० मा अस्तु सेवं तिरच्छा चारसाहा मनः ॥ ५ ॥ ४१ मा  
यतिसापूजासो चक्रव्यालिभ्यमां उत्तमा निर्गमा  
पूजासो हंपूजासाहासनः ॥ ६ ॥ ४२ मा स्यक्षणं के  
वं मध्यमध्यमस्य श्रह रहय ॥ ४३ मा स्य अडोरा  
प्रेषा प्रिणे मरणात्करो ॥ ७ ॥ पूजा कोटि सम्भूतो त्रेसो  
त्रकोटि सम्भूतपः त्रपकोटि सम्भूतिं धानकोटि  
लभा लभः ॥ ८ ॥ ४४ मा उत्तमो लघुत्तीनं च मध्यमाथान

The Rajawadi Sanskrit Manuscript Collection  
Digitized by Sankalpaavali Foundation  
Digitized by Sankalpaavali Foundation  
Digitized by Sankalpaavali Foundation  
Digitized by Sankalpaavali Foundation

२) धरणा॥३५धमाजपुहोमंकतीथ  
कात्राधमाधमः॥८॥

"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Prathmeshwar, Mumbai."



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)